जादुई मर्तबान

लेखन एवं चित्राँकन

माला मरवाहा

क

यह किताब

....

की है

इस किताब के प्रकाशन में सहायता के लिए कथा

कॉगनिज़ेंट फाउण्डेशन,

चेन्नई की आभारी है।

v/;kid@v/;kfidkvk dk fy,

cM mnn'; Ük[kyk – इस श्रृंखला की पुस्तकों में कहानियों द्वारा बच्चों को अपने वातावरण, जीवन और भविष्य के प्रति सजग एवं सक्रिय होने की प्रेरणा दी जा रही है।

tknbl ertcku अपने विश्वास, अपनी मेहनत, अपनी कार्यकुशलता का प्रतीक है। बच्चों को अपने भविष्य के बारे में सोचने की शिक्षा दें। कहानी के द्वारा विशेषणों का अभ्यास कराएँ।

जादुई मर्तबान

लेखन एवं चित्राँकन

माला मरवाहा

इस बार गर्मियों में माँ ने एक छोटी-सी हँडिया में कच्चे आम का मज़ेदार अचार डाला।

मैंने एक छोटे-से मर्तबान में इसमें से थोड़ा-सा तेल, बहुत से खट्टे, चटपटे आम के टुकड़े और अम्मा की विशेष विधि से बना मसाला, डाल लिए।

फिर मैं दादू के साथ,
मेले के लिए चल पड़ी।

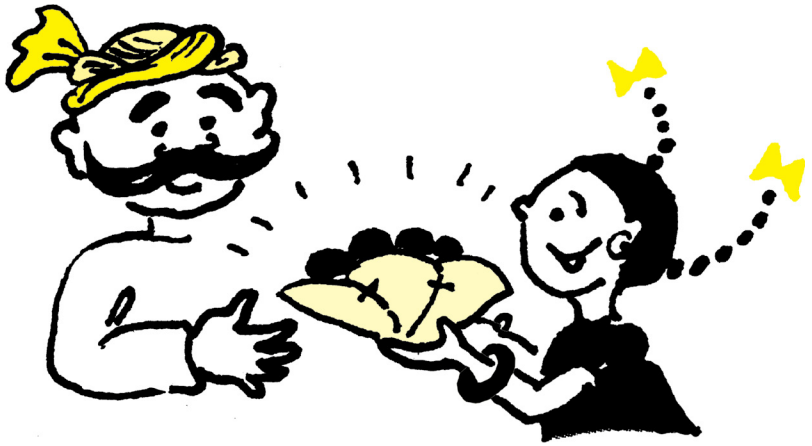

मेले में मैंने एक बड़े पत्ते के दोने में, आधा अचार चौधरीजी को दे दिया। अचार पाकर चौधरीजी बहुत खुश हुए।

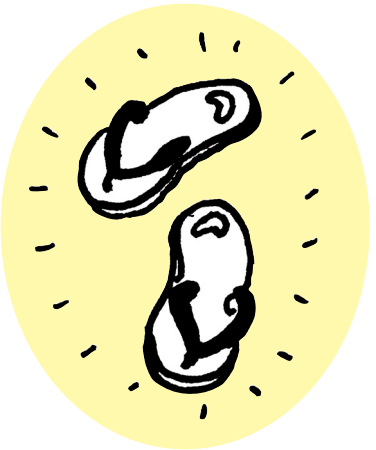

उन्होंने मुझे रबड़ की एक जोड़ी नई चप्पलें दीं।

उन्हें पहनकर मैं खूब जल्दी-जल्दी चल सकती थी, क्योंकि मेरे पैर में अब कंकड़-पत्थर नहीं चुभ रहे थे।

मेले के दूसरे छोर पर
दादू ने मेरे लिए एक काली
मिट्टीवाली हँडिया ख़रीदी और
साथ में पीली लकड़ी की एक
कड़छी भी।

उन्होंने मुझे चने भी दिए।

हँडिया में मैंने चने उबाले।

उन पर नींबू का रस छिड़का,
और हरी मिर्च तथा कड़ी-पत्ते
भी कतरकर डाल दिए।

चने अभी तैयार ही हुए थे कि, मजिस्ट्रेट चाचा आ पहुँचे।

उन्होंने पूछा, “तुम्हारी हँडिया में क्या है बिटिया?”

मैंने कहा, “चटपटे, मज़ेदार चने।”

वे बोले, “मुझे भी तो चखाओ ज़रा।”

दादू, चाचा और मैंने साथ मिलकर, ख़ूब शौक से चने खाए।

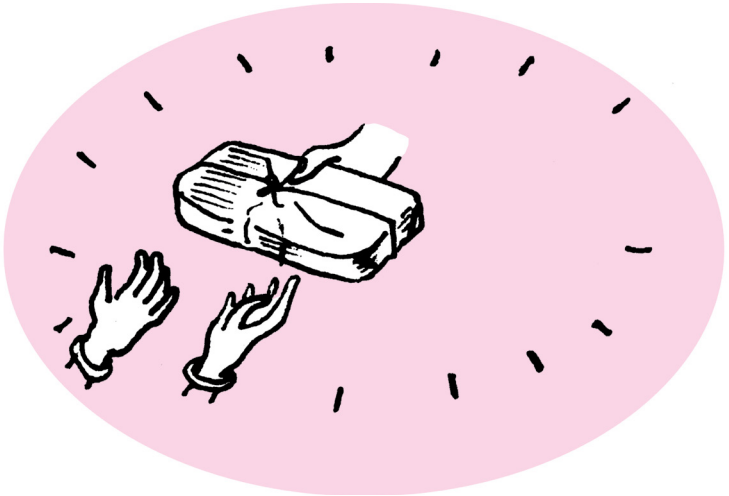

चने खाकर, मजिस्ट्रेट चाचा मुस्काए और अपनी जीप में रखा एक छोटा-सा लिफ़ाफ़ा निकाल लाए।

उसे मुझे दे कर वे बोले, "मैं अपनी बेटी के लिए यह लाया था। इसे तुम ले लो। उसके लिए मैं एक और ले आऊँगा।"

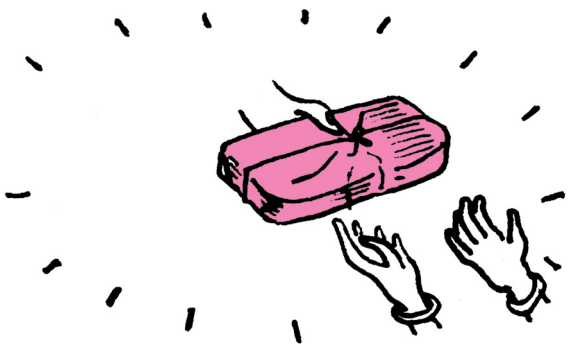

मैंने उत्सुकता से लिफ़ाफ़ा खोला। उसमें रंगों का एक डिब्बा और एक छोटा-सा ब्रुश था। मैं ख़ुशी से फूली न समाई!

और दादू के आगे-आगे उछलती-कूदती घर पहुँची।

एक सफ़ेद कागज़ लिया और रात का खाना तैयार होने तक, मैं रंगों से चित्र बनाती रही।

दादू और मैं इन चित्रों को लेकर अगले दिन, मजिस्ट्रेट चाचा को दिखाने गए।

मेरे रंगीन चित्रों को देखकर वे खुश होकर बोले –

“वाह, क्या बात है! बहुत सुन्दर।” फिर वे दादू की ओर मुड़कर बोले, “क्या यह स्कूल में पढ़ना चाहेगी?”

"स्कूल ?" दादू सोच में पड़ गए। फिर बोले, "इसके अम्मा और बापू शायद ही मानें।"

अम्मा और बापू ने पहले तो मना कर दिया, लेकिन मेरे बहुत कहने पर वे दोनों मान गए।

मैं खुशी से झूम उठी!

रबड़वाली अपनी नई
चप्पलें पहनकर, मैं अब एक
किलोमीटर दूर ज़िला-स्कूल में
जाती हूँ।

वहाँ मैं पढ़ना-लिखना सीखती
हूँ, तस्वीरें बनाती हूँ, उनमें रंग
भरती हूँ, गाना गाती हूँ, खेलती
हूँ और हाँ, मिट्टी के खिलौने
और चटाइयाँ भी बनाती हूँ।

मैं कितनी खुश हूँ,
क्या बताऊँ!

और यह सब इसलिए हुआ
कि मैंने अम्मा के बनाए
अचार में से थोड़ा-सा अचार
चौधरी जी को दिया, जिन्होंने
मुझे चप्पलें भेंट कीं ...

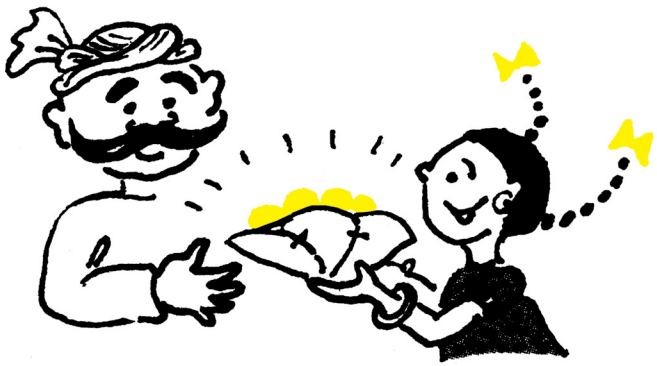

जिन्हें पहनकर मैंने
अम्मा के बनाए अचार में
से थोड़ा-सा मसाला और
चने पकाकर मजिस्ट्रेट
चाचा को खिलाए।

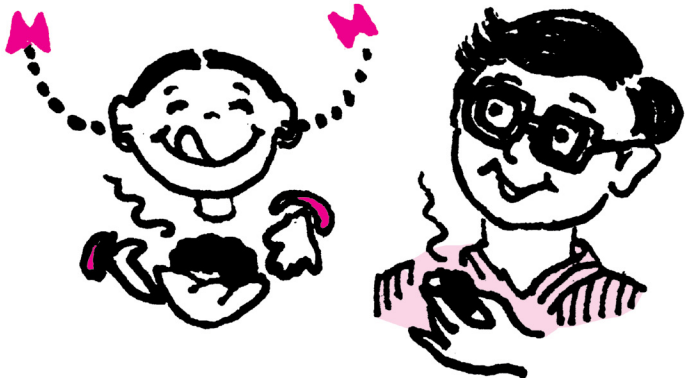

अब तो तुम समझ
ही गए होंगे कि मैं
अपने मर्तबान को जादुई
मर्तबान क्यों कहती हूँ?

सच में, स्कूल जाना है मज़ेदार!

तो जल्दी-जल्दी ढूँढ़ो कि स्कूल में क्या-क्या लेकर जाना ज़रूरी है।

प	कि	ता	ब	ने	फ
का	कू	ज	स	क	पें
पी	म	भ	ता	र	सि
य	र	ब	ड़	रा	ल
स	प	व	ख	च	ग

उत्तर: 1. किताब 2. कापी
3. पेंसिल 4. रबड़ 5. बस्ता

धम्मक धम

लेखिकाः कमला भसीन

धम्मक धम भई

धम्मक धम

छोटे छोटे बच्चे हम

लड़की, न लड़के से कम

धम्मक धम भई

धम्मक धम

ये शब्द अब हैं दोस्त हमारे

लेखक एवं चित्रकार, ekyk ejokgk दिल्ली व मसूरी में पढ़ी। कैलिफोर्निया कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स से ग्रैजूएषन करने के बाद इन्होंने एम. एस. यूनिवर्सिटी, बरोदा, से कला इतिहास में मास्टर की डिग्री प्राप्त की। बच्चों की पत्रिका टारगेट में इनकी कहानियाँ और चित्र नियमित रूप से आते थे। इनके अन्य प्रकाषित कार्यों में बच्चों के लिए लघु कहानियाँ, कविताएँ और आधुनिक भारतीय कला पर लिखे गए अनेकों लेख भी षामिल हैं।

सीरीज संपादिका: गीता धर्मराजन

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।
इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

मेरी अगली कहानी

अगड़म, बगड़म, तिगड़म हम

झट-पट सीखें अक्षर हम।
200 दोस्त बनें कम से कम
तिगड़म अगड़म बगड़म हम!

KATHA

यह कहानी "तमाशा" में सन् 1991 में प्रकाशित हो चुकी है
दूसरा संस्करण 2007, तीसरा संस्करण 2009, चौथा संस्करण 2010,
पाँचवाँ संस्करण 2010, छठवाँ संस्करण 2013

कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के
किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के
रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

एजियन ऑफसेट, नोएडा (उत्तर प्रदेश) द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-89020-89-7
संपादकीय टीमः वैशाली माथुर, युक्ति बैनर्जी

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलने वाली खुशी को बढ़ावा देना। कथा स्कूल दिल्ली के बस्ती, मोहल्लों और अरुणाचल प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में स्थित है।

ए 3 सर्वोदय एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग
नई दिल्ली–110017
दूरभाषः 4141 6600, 4182 9998, फैक्सः 2651 4373
ई मेलः ilr@katha.org, इंटरनेटः http://www.katha.org
प्रोडक्शन टीमः प्रकाश आचार्य, यशपाल बिष्ट, विक्रम कुमार

जैसे बूँद-बूँद से गहरे सागर, रेत के
कणों से फैले हुए रेगिस्तान बनते हैं,
वैसे ही नन्हे बच्चों की सूझ-बूझ से बनती हैं
मनोरंजक कहानियाँ। चलो ले चलते हैं तुम्हें
अबु, नूतन, कोकिला, जिश्नू ... से मिलाने।
क्या है इनमें कोई तुम्हारे जैसा ... ?

for young learners
a katha book
ISBN 978-81-89020-89-7
www.katha.org
Rs 48